''संस्कार जागृति मिशन'' को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–04 वर्ष–02, जुलाई 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-04 वर्ष-02, संवत्सर 2077 जुलाई 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख–कविता ... पृष्ठ संख्या

वेदवाणी.......03
सम्पादकीय.......04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया.......05-06
मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?.......07-08
जीवन में प्रकृति संरक्षण का महत्व.......09
सुनी हुई बातों पर यकीन न करें.......10
कवि की कलम से.......11
स्वास्थ्य चर्चा.......12
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां.......13-15
विज्ञापन.......16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

प्रभुभक्त संसार-महासागर से तर जाते हैं

वेद मंत्र

ओ३म् तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत् स मन्दी धावति।।

-ऋ० ६।५८।१ ; साम० पू० ६।१।२।४

ऋषिः-**वत्सारः**।। देवता-**पवमानः सोमः**।। छन्दः-**निचृद्गायत्री**।।

विनय

हे दु:ख और पाप से तरना चाहनेवाले भाइयो! देखो, कोई हैं, जोकि तर गये हैं। इस दुस्तर दीखनेवाले संसार-महासागर से तरा जा सकता है-सचमुच तरा जा सकता है, परन्तु तरता वह है जो ''मन्दी'' है। क्या तुम भगवान् की भक्ति-स्तुति में रमनेवाले हो? क्या इस भजनरस में तुम्हारा अन्त:करण तृप्त हो गया है? क्या तुम्हारा अपना आन्तर (अन्त:) आनन्द से परिपूर्ण हो गया है, अर्थात् तृप्त होकर तुम्हें अब संसार की अन्य किसी वस्तु की-किसी भी वस्तु की कामना नहीं रही है? क्या तुम ऐसे मस्त हो गये हो? ऐसे आत्माराम हो गये हो? ''मन्दी'' होने के लक्षण तो ये ही हैं। देखो, ऐसे ''मन्दी'' तरते जा रहे हैं और तर गये हैं।

यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है? जब भजन करने से अन्दर सोई पड़ी हुई शक्ति जागती है तो वह प्राण, वाणी और मन को उज्जीवित करती हुई ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। हठ-योगियों की परिभाषा में इसे कुण्डलिनी का जागरण और प्राणोत्थान कहते हैं। इस कुण्डलिनी का वास्तविक जागरण ही 'तरना' शुरू करना है। प्राण की धारा मूलाधार से उठकर ऊपर चढ़ने लगती है, हैमवती शक्ति नाचती-कूदती हुई, भजन-स्तुति करती हुई मार्ग में प्राण, वाणी, मन के अद्‌भुत चमत्कार दिखाती हुई ऊपर, अपने शिवरूप स्वामी की ओर चढ़ने लगती है। यह आध्यान अर्थात् मानसिक चेतना से युक्त प्राणधारा के रूप में क्रमश: ऊपर जाती हुई अनुभूत होती है। यही उत्पन्न किये ''अन्धस्'' (सोम) की धारा है जिसके साथ-साथ आत्मा ऊंचा होता जाता है। इसी धारा के साथ 'मन्दी' नामक भक्त की ऊर्ध्वगति होती है। प्रसिद्ध सात लोक अन्दर ही हैं। उन्नत होता हुआ आत्मा इन सब लोकों को पार करता हुआ सत्यलोक में पहुंचकर पूर्ण स्वतंत्र हो जाता है- बिल्कुल पार उतर जाता है। प्राण, वाणी, मन आदि शक्तियां शिर के सत्यलोक में जाकर ठहर जाती हैं और समाधि सिद्ध हो जाती है। इस प्रकार देखो! ''मन्दी'' (भगवान् का भक्त) दु:ख-सागर को तर जाता है-ऊपर पहुंच जाता है। अहो! इस पुण्य घटना का विचार करना-इसे कल्पना की आंख से देखना-भी कितना ऊंचा उठने वाला है!
''तरत् स मन्दी धावति'', ''तरत् स मन्दी धावति।।''

शब्दार्थ

मन्दी- जो भक्ति-स्तुति करनेवाला, स्वयं तृप्त, आनन्दमंग्र पुरूष होता है **सः**- वह **तरत्**- तर जाता है **सः**- वह **सुतस्य**- उत्पन्न की गई। **अन्धसः**- आध्यानयुक्त प्राण व वाणी की **धारया**- धारा के साथ **धावति**- ऊपर वेग से उठता जाता है। **सः मन्दी**- वह आनन्द-तृप्त **तरत्**- तर जाता है, **धावति**- ऊर्ध्वगति द्वारा ऊपर चढ़ जाता है। **................('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)**

सम्पादकीय

भारत का भविष्य " नशा " की चपेट में...

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

विश्व में भारत में सबसे ज्यादा युवा हैं। देश की जनसँख्या आज 125 करोड़ के पार होते जा रही है, इस जनसँख्या का एक बड़ा भाग युवा वर्ग का है। आज चिंताजनक बात यह है कि हमारे देश का भविष्य आज नशाखोरी के जंजाल में जकड़ता जा रहा है। आज आधे से अधिक युवा पीढ़ी नशे की गुलामी की तरफ बढ़ गई है। पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध ने हमारे देश को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। इसकी ओर देश के युवा सबसे अधिक आकर्षित हैं और अपनी भारतीय संस्कृति, संस्कार व सभ्यता को छोड़ पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भाग रहे हैं। नशाखोरी भी इसी का परिणाम है। युवाओं में नशा सिर्फ सिगरेट व शराब तक सीमित नहीं रहा बल्कि वर्तमान समय में कोकीन, हेरोइन, गांजा, चरस, नशीली दवाइयाँ आदि का नशा युवाओं को तेजी अपनी गिरफ्त में ले रहा है। नशा एक ऐसी समस्या है, जिससे नशा करने वाले के साथ-साथ, उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है और अगर परिवार बर्बाद होगा तो समाज नहीं रहेगा, समाज नहीं रहेगा तो देश भी बिखरता चला जायेगा। इन्सान को इस दलदल में एक कदम रखने की देरी होती है, जहाँ आपने एक कदम रखा फिर आप मजे के चलते इसके आदि हो जायेगें, और दलदल में धसते चले जायेगें। नशे के आदि इन्सान, चाहे तब भी इसे नहीं छोड़ पाता, क्योंकि उसे तलब पड़ जाती है, और फिर तलब ही उसे नशा की ओर और बढ़ाती है।

शराब, गांजा, भांग, चरस, अफीम, ताड़ी आदि नशे वास्तविक जीवन से पलायन करने की मनोवृत्ति के परिचायक हैं। लोग इनकी शरण में आकर या तो जीवन की समस्याओं से घबरा जाते हैं अथवा अपने संगी-साथियों को देखकर इन्हें अपनाकर पहले से ही अपना मनोबल चौपट कर लेते हैं। मादक द्रव्यों के प्रभाव से वह अपनी अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा भावनाओं के साथ-साथ सामान्य समझ-बूझ और सोचने-विचारने की क्षमता भी खो देता है। मादक द्रव्य इतने उत्तेजक होते हैं कि सेवन करने वाले को तत्काल ही अपने आसपास की दुनिया से काट देते हैं और उससे विक्षिप्त कर देते हैं। कहीं यह शौक के रूप में, कहीं मान्यताओं के रूप में तो कहीं हाई सोसाइटी की प्रतिष्ठा के रूप में, कहीं स्वयं को युवा और स्मार्ट दिखाने के चलन, कहीं दु:ख, तनाव, अशान्ति को हटाने के लिए लोग नशे के आदि हो गए हैं। चरस, गांजा, भांग का प्रयोग लोग आनन्द की अनुभूति करने के लिए करते हैं। थोडे समय के आनन्द के बाद नशा उतरने पर चित्त विभ्रम, अनिद्रा, बैचेनी, याददास्त की कमी, जी मिचलाना, अपच आदि समस्यायें खड़ी हो जाती हैं। हेरोइन, मोरफिन आदि पदार्थ निद्रा लाने तथा दर्दनाशक के रूप में प्रयुक्त औषधियाँ मानी गईं परन्तु आधुनिक समय में इनका प्रयोग नशे के रूप में किया जाने लगा है। बताया जा रहा है कि आज देश में 15 लाख से अधिक ब्राउन शुगर के व्यसनी हो चुके हैं। नीद लाने वाले गोलियाँ भी नशे के रूप में लेने लगे हैं। रबर चिपकाने वाला पदार्थ सोल्यूसन और व्हाटनर आदि भी नशा करने के लिए प्रयोग करने वाला पदार्थ बन गये हैं। चोरी और अपराध की दुनिया में कदम रखने वाले अधिकांश युवा इन नशों के आदी हैं। जब इन सबसे ग्लानि हो जाती है तो मानव अपने शरीर को नष्ट करने में भी देरी नहीं करता।

युवा पीढ़ी को इस नशे की दुनिया से अलग रखने के लिए अगर थोड़े से भी प्रयास किये जायें तो आज के इस युग में होने वाले बहुत से अपराध व भारत का भविष्य स्वर्णिम हो सकता है। इस ओर हमें अपने घरों से ही सुधार की आवश्यकता है। घरों में हमें प्राचीन वैदिक संस्कृति, संस्कार व सभ्यता को स्थापित करना होगा तभी हमारी आने वाली पीढ़ी व्यसनमुक्त हो पायेंगी। इसके लिए सबसे पहले अपने आप से सुधार की प्रक्रिया शुरू करनी होगी, क्योंकि-

" हम बदलेंगे तो जग बदलेगा, हम सुधरेंगे तो जग सुधरेगा। "

गतांक से आगे...

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

.....जिस प्रकार आयुर्वेदिक रसायनें बनाने की अवधि में उन पर कितने ही संस्कार डाले जाते हैं, कई बार कई प्रकार के रसों में उन्हें सरल किया जाता है और कई बार उन्हें गजपुट आदि विधियों द्वारा अग्नि में जलाया, तपाया और संस्कारित किया जाता है। तब कहीं वह कम महत्व की धातु मकरध्वज सरीखी बहुमूल्य एवं चमत्कारिक शक्ति सम्पन्न रसायन बन पाती है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य को भी समय-समय पर विभिन्न आध्यात्मिक उपचारों द्वारा सुसंस्कृत बनाने की महत्वपूर्ण पद्धति भारतीय तत्ववेक्ता शक्तियों ने विकसित की थी। वे इस तथ्य से भली-भांति परिचित थे कि बार-बार तपाये जाने सुसंस्कारित किये जाने से मनुष्य के संचित कुसंस्कार नष्ट होते और उनके स्थान पर उत्क्रष्टता की पक्षधर देवी विशेषताओं के अंकुर उगते, पल्लवित, पुष्पित होते हैं। यों तो किसी व्यक्ति को सुसंस्कारित बनाने के लिए शिक्षा, सत्संग, वातावरण, परिस्थिति, सूझ-बूझ आदि अनेक बातों की आवश्यकता होती है। सामान्यत: ऐसे ही माध्यमों से लोगों की मनोभूमि विकसित होती है। इसके अतिरिक्त तत्ववेक्ताओं ने मनुष्य की अन्त:भूमि को श्रेष्ठता की दिशा में विकसित करने के लिए कुछ ऐसे सूक्ष्म उपचारों का भी आविष्कार किया है, जिनका प्रभाव शरीर तथा मन पर ही नहीं सूक्ष्म अन्त:करण पर भी पडता है। और उसके प्रभाव से मनुष्य को गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से समुन्नत स्तर की ओर बढने में सहायता मिलती है।

प्राचीन ऋषियों ने संस्कारों का निर्माण मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए किया था। यह विश्वास किया जाता था कि संस्कारों के अनुष्ठान से व्यक्ति में दैवी गुणों का आविर्भाव हो जाता है। यही संस्कारों का सांस्कृतिक प्रायोजन भी हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को अनुशासित किया जाना, उसकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक है संस्कारों से इसी की पूर्ति होती है। भारतीय संस्कृति के आदि प्रवक्ता भगवान मनु का कथन है कि संस्कार शरीर को शुद्ध करके उसे आत्मा के निवास के उपयुक्त बनता है। महर्षि षबर का मत है कि संस्कार द्वारा मनुष्य किसी उद्देश्य विशेष के उपयुक्त बनता है। मानव जीवन का सर्वोच्च पुरुषार्थ मोक्ष माना गया है। यह एक तथ्य है कि जन्म से प्रत्येक व्यक्ति शूद्र होता है, संस्कारों द्वारा परमार्जित होकर ही वह द्विज बनता है। इस प्रकार संस्कारों का मुख्य प्रायोजन आध्यात्मिक तो है ही साथ ही नैतिक विकास का उद्देश्य भी इसमें सन्निहित है। सन्त बिनोवा भावे जी ने अपनी कृति 'गीता प्रवचन' में कहा है- ''यदि जीवन में संस्कारों का पवित्र प्रवाह सतत् बहता रहे तो ही अन्त में मनुष्य महामरण का आनन्द उठा सकता है।'' इस तरह मानव जीवन को पवित्र एवं उत्क्रष्ट बनाने वाले आध्यात्मिक उपचार का नाम ही संस्कार है। महर्षि पाणिनी के कथानुसार संस्कार शब्द के तीन अर्थ हैं - 'उत्कर्ष साधनं संस्कार:' अर्थात् उत्कर्ष करने वाला साधन, समवास अर्थात् संघात और आभूषण। प्रत्येक जन्म के साथ कुछ गुण-अवगुण लेकर पैदा होता है। उस पर पूर्व जन्मों के विविध संस्कार छपे रहते हैं। आयु वृद्धि के साथ उस पर नये-नये संस्कार भी पडते रहते हैं। अत: पुराने संस्कारों को प्रभावित करके उनमें परिवर्तन, परिवर्धन अथवा उनका उन्मूलन करना प्रतिकूल संस्कारों को विनष्ट कर अनुकूल संस्कारों का निर्माण करने का विधान ही संस्कार पद्धति कहलाता है।

भारतीय धर्म के अनुसार संस्कार 16 प्रकार के होते हैं, जिन्हें शोडष संस्कार कहते हैं। माता के गर्भ में आने के दिन से लेकर मृत्यु तक की अवधि में समय-समय पर प्रत्येक देव संस्कृति के आराधक को 16 बार संस्कारित करके उसे एक प्रकार की आध्यात्मिक रसायन बनाया जाता है।................................(शेष पेज 06 पर)

पेज 05 का शेष

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया'' (लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य)

.....इसमें व्यक्ति को देव-मानव स्तर तक जा पहुंचने की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभावी प्रेरणा दी जाती है। यह संस्कार पद्धति सूक्ष्म अध्यात्म विज्ञान की अतीव प्रेरणास्पद प्रक्रिया पर अवलम्बित है। वेद मन्त्रों के सस्वर उच्चारण से उत्पन्न होने वाली ध्वनि तरगें यज्ञीय ऊष्मा के साथ सम्बद्ध होकर एक अलौकिक वातावरण प्रस्तुत करती है। जो भी व्यक्ति इस वातावरण में होते हैं या जिनके लिए भी उस पुण्य प्रक्रिया का प्रयोग होता है, वे उससे प्रभावित होते हैं। यह ऐसे प्रचण्ड प्रवाह उत्पन्न करता है, जिससे व्यक्तियों के गुण-कर्म स्वभाव में अन्य अनेकों दिव्य विशेषताऐं प्रस्फुटित होती हैं। संस्कारों की प्रक्रिया एक ऐसी आध्यात्मिक उपचार पद्धति है जिसका परिणाम व्यर्थ नहीं जाने पाता। व्यक्तियों के विकास में इन उपचारों से आश्चर्यजनक सहायता मिलती देखी जाती है। संस्कारों में जो विधि-विधान है उनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव मनुष्य को सन्मार्गगामी होने के उपयुक्त बनाता है। संस्कार के मन्त्रों में अनेक ऐसी दिशाऐं भरी पडी हैं जो उन परिस्थितियों के लिए प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी हैं। उदाहरण के लिए सीमान्त संस्कार के समय उच्चारण किये जाने वाले मन्त्रों में गर्भवती के रहन-सहन, आहार-विहार सम्बन्धी महत्वपूर्ण प्रशिक्षण मौजूद है। इसी प्रकार विवाह में दाम्पत्य जीवन की, अन्नप्राशन में भोजन-छाजन की, वानप्रस्थ में सेवा-परायण जीवन जीने की आवश्यक शिक्षाऐं भरी पडी हैं। परिवार को संस्कारवान बनाने की, कौटुम्बिक जीवन को सुविकसित बनाने की यह एक मनोविज्ञान सम्मत एवं धर्मानुमोदित प्रक्रिया है। हर्षोत्सव के वातावरण में देवताओं को साक्षी, अग्निदेव का सानिध्य, धर्म-भावनाओ से ओत-प्रोत मनोभूमि, स्वजन सम्बन्धियों की उपस्थिति, पुरोहित द्वारा कराया हुआ धर्म कृत्य यह सब मिलजुलकर संस्कार से सम्बन्धित व्यक्तियों को एक विशेष प्रकार की मानसिक अवस्था में पहुंचा देते हैं। दिव्य वातावरण में उस समय जो प्रतिज्ञायें की जाती हैं, जो प्रक्रियायें करायी जाती हैं वे अपना गहरा प्रभाव सूक्ष्म मन पर छोडती हैं जिनकी अमिट छाप चिरस्थायी बनी रहती है। ऋषियों ने अपनी आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक शोधों के आधार पर संस्कार प्रक्रिया का निर्माण किया है। वह जितनी प्रभावशाली पूर्वकाल में थी उतनी ही आज भी हैं। यदि उन्हें ठीक ढंग से उचित व्यवस्था के साथ उपयुक्त वातावरण में सम्पन्न किया जा सके।

संस्कार वाणी

''अपने बच्चों को अमीर होने की शिक्षा न दें, बल्कि खुश रहने के संस्कार दें। इससे जब वो बड़े हो जायेंगे, तो हमेशा वस्तुओं की कदर करेंगे न कि उनकी कीमत की।''

- डा.अर्चना प्रिय आर्य जी (अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका

श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी

(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

की अमृतमयी वाणी में

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित

यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश

कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

गतांक से आगे

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

चलभाष : 09719601088

......बहुत से व्यक्ति ये सोचते हैं कि मैं बहुत बुद्धिमान हूं, मैं सब कुछ जानता हूं परन्तु आप विचार करें कि हम और आप आंखों से देखते हैं, दिन में दौढ़े चले जाते हैं, पुस्तकें पढ़ते हैं, सुई में धागा डाल देते हैं अर्थात् सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं को देख लेते हैं लेकिन जिन आंखों से सूई में धागा डाल रहे थे, जिन आंखों से पुस्तकें पढ़ रहे थे उन्हीं आंखों से रात्रि के अंदर अंधेरे में जिस समय सड़क पर चल रहे होते हैं तो बड़े-बड़े पत्थर दिखाई नहीं देते हैं। कांटे हमें दिखाई नहीं देते हैं, गड्डे हमें दिखाई नहीं देते हैं। जिन आंखों से दिन में सुई में धागा डाल रहे थे, पुस्तक पढ़ रहे थे वही आंखें हमारे पास हैं, हाथ भी हमारे पास हैं, पैर भी हमारे पास हैं दिन में पैरों से सड़क पर दौड़े चले जा रहे थे परन्तु उन्हीं पैरों से, उसी रास्ते पर हम ठोकरें क्यों खा रहे हैं? इसका कारण क्या है? जैसे आंखों के लिए सूर्य की आवश्यकता है, बिना सूर्य के आंख देख नहीं पातीं, रात्रि में दीपक की, टॉर्च आदि की आवश्यकता पड़ती है ठीक उसी प्रकार बुद्धि को विवेक की, ज्ञान की आवश्यकता है। और ज्ञान का आधार वेद है। इसलिए जो लोग वेद के प्रकाश में विचरण करते हैं, जो लोग वेद के ज्ञान के अनुसार अपना जीवन बना लेते हैं वो व्यक्ति जीवन में कभी ठोकरें नहीं खाते। क्योंकि उनके पास वेद रूपी टॉर्च है। वेद कहता है-

''स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ताम्''

अर्थात् वेद माता पावमानी माता है, वह पवित्र करने वाली है। वेद में दो शब्द अनेक स्थानों पर आये हैं- देव और सविता। यानि वह परमात्मा देव है हमें सब कुछ देता है, उसने सारी सृष्टि हमें सजाकर दी है। जैसे एक मां अपने बेटे को बहुत सुंदर भोजन बनाकर थाली में परोसती है ठीक उसी तरह से सृष्टि के आरंभ में परमपिता परमात्मा ने इस अमृत पुत्र के लिए, मनुष्य के लिए बहुत सुंदर संसार सजाकर दिया और कहा जाओ इस संसार को भोगो। महर्षि दयानंद सरस्वती अपने ग्रंथ 'संस्कार विधि' के अंदर गृहस्थ प्रकरण में लिखा है प्रत्येक स्त्री-पुरूष को प्रातः शायम् दोनों समय ब्रम्हमुहूर्त में उठकर एकांत देश में जाकर योगाभ्यास की रीति से नित्यप्रति परमपिता परमात्मा की उपासना न्यून से न्यून दो घंटे अवश्य करनी चाहिए। योग दर्शन के अनुसार- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि द्वारा अपनी बुद्धि को पवित्र करते हुए परमेश्वर के निज नाम 'ओ3म्' का जाप करना चाहिए।

यहां एक प्रश्न हो सकता है कि हम 'ओ3म्' नाम द्वारा ही जाप क्यों करें, भजन क्यों करें? राम नाम से जाप क्यों न करें? कृष्ण नाम से जाप क्यों न करें? शिव नाम से जाप क्यों न करें? विष्णु नाम से जाप क्यों न करें? आदि-आदि और अनेक नामों से जाप क्यों न करें? इसका मुख्य कारण है कि परमेश्वर में जो गुण है वह इन नामों में नहीं है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के 101 नामों की व्याख्या की है, जिसमें वह लिखते हैं कि हम परमेश्वर को विष्णु क्यों कहते हैं? वह परमात्मा कण-कण में व्यापक है इस कारण उसे विष्णु कहते हैं। इसमें एक प्रश्न फिर आ सकता है कि कण-कण में व्यापक तो वायु भी है, प्रकाश भी है लेकिन विचार किया कि क्या वायु सृष्टि की उत्पत्ति कर सकती है? क्या वायु हमारे शरीर में प्राण शक्ति दे सकती है? क्या वायु सर्वज्ञ हो सकती है? आदि गुण ईश्वर के वायु में नहीं घटते। इसी तरह और जो शब्द हैं- जैसे राम, कृष्ण, शिव आदि में भी ईश्वर के गुण नहीं घटते। लेकिन 'ओ3म्' एक ऐसा शब्द है जिसमें परमात्मा के सभी गुण समाहित हो जाते हैं, परमात्मा के सभी गुण समाहित हो जाने के कारण ही 'ओ3म्' शब्द परमात्मा का मुख्य नाम है।... (शेष पेज 08 पर)

पेज 07 का शेष

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है? (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....इस ओ३म् शब्द में तीन अक्षर हैं- अ,उ, म। योग दर्शन का ऋषि कहता है-

"तद्जप: तदर्थ मानवम्"

अर्थात् जैसा हम जप कर रहे हैं वैसी भावना होनी चाहिए। हम जाप कुछ कर रहे हैं और भावना हमारी कुछ हैं तो उसका लाभ हमें नहीं मिलेगा। इसलिए ओ३म् शब्द का जब हम जाप करते हैं तो 'अ' शब्द हमारे सामने होता है उस समय विचार करें- जैसे संस्कृत भाषा में दो प्रकार के अक्षर होते हैं-स्वर और व्यंजन। अ शब्द स्वर है, जो बिना किसी की सहायता के बोला जाता है। व्यंजन-जो किसी अन्य स्वर की सहायता से बोले जाते हैं। जैसे प्रत्येक व्यंजन के अंदर क, ख, ग, घ, ड, च, छ आदि में अ स्वर विद्यमान है। बिना अ के इन अक्षरों का उच्चारण नहीं हो सकता है। ऐसे ही बिना परमात्मा के सारे विश्व की किसी वस्तु का निर्माण नहीं हो सकता है-

तेरी कृपा के बिना हे प्रभु मंगल मूल।
पत्ता तक हिलता नहीं खिले न कोई फूल।।

उस परमेश्वर की कृपा के बिना संसार की किसी भी वस्तु का निर्माण नहीं हो सकता। हम नित्यप्रति जिन पदार्थों का सेवन कर रहे हैं या भोग करते हैं उन पदार्थों के अन्दर उनके मूल में परमात्मा की कृपा दिखाई देगी।

आप विचार करें कि हमें प्यास लगी है तो प्यास बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता पड़ती है। क्या हम जल बना सकते हैं? वह परमात्मा ही चाहे वर्षा के रूप में, चाहे भूभर्ग के रूप में, चाहे बर्फीले पहाडों के रूप में हमें जल देता है। इस प्रकार देखा, हमें जल परमेश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के प्रथम नियम में कहा है- "सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।" आदि मूल परमेश्वर क्यों है? इसलिए कि किसी भी पदार्थ की प्राप्ति के अन्दर उस परमात्मा की कृपा ही दिखाई देती है। जल की आवश्यकता पड़ी तो जल को बनाने वाला परमात्मा है, रोटी की आवश्यकता पड़ी तो गेंहूं को बनाने वाला परमात्मा है, कपड़ा की आवश्यकता पड़ी तो कपास को बनाने वाला परमात्मा है, मकान की आवश्यकता पड़ी तो जल, मिट्टी, लोहा, सीमेंट आदि सभी वस्तुओं को बनाने वाला परमात्मा है, दूध की आवश्यकता पड़ी तो आप विचार कीजिए गाय, भैंस, बकरी आदि सभी घास, भूसा खाती हैं तो घास को बनाने वाला परमात्मा है। इस प्रकार हम वस्त्रों का प्रयोग अपने शरीर पर करते हैं, भोजन हम प्रतिदिन करते हैं, मकान में रहते हैं, अग्नि का प्रयोग हम दैनिक जीवन के प्रयोग में करते हैं, आने-जाने में किसी न किसी रूप में सवारी का प्रयोग करते हैं इन सबके प्रयोग करने में उस परमपिता परमात्मा की कृपा देखनी चाहिए और बार-बार विचार करना चाहिए, चिंतन करना चाहिए कि हे प्रभो तेरी की कृपा से हमें से सब वस्तु प्राप्त हुई है या हो रही है। इस प्रकार जैसे प्रत्येक शब्द के अंदर अ शब्द व्यापक है ऐसे ही परमपिता परमात्मा कण-कण में व्यापक है। जैसे अ शब्द के टुकड़े नहीं हो सकते वो अखण्ड है उसे तोड़ा नहीं जा सकता ऐसे ही परमात्मा अखण्ड है, वह टूटता नहीं, विच्छेद नहीं होता। इसलिए उसे हम आदित्य कहते हैं। सूर्य के प्रकाश का कभी खण्डन नहीं होता और न कभी उसके टुकड़े होते हैं। जब से सृष्टि बनी है तब से लेकर आज तक सूर्य निरन्तर प्रकाश दे रहा है, इसलिए सूर्य को हम आदित्य कहते हैं। वह परमात्मा जिसका कभी खण्ड नहीं होता, वह व्यापक है, सब जगह है- जल में, थल में, नभ में सभी में वह व्यापक है। इस प्रकार 'ओ३म्' शब्द का अर्थ हुआ- वह परमात्मा सृष्टि के कण-कण में है। वह अखण्ड है, व्यापक है। 'उ' शब्द का अर्थ है-वह परमात्मा सृष्टि का संचालक है और 'म्' शब्द का अर्थ है- वह परमात्मा इस सृष्टि का संहार करने वाला है। 'ओ३म्' शब्द का अर्थ रक्षा करने वाला भी है। इस प्रकार ओ३म् शब्द में परमात्मा के सभी गुण समाहित हो जाते हैं। अन्य शब्दों में ईश्वर के सभी गुण नहीं समाहित होते हैं। इसलिए हमें नित्यप्रति ओ३म् शब्द द्वारा ही ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी चाहिए। अन्य शब्दों द्वारा नहीं।

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर

जीवन में प्रकृति संरक्षण का महत्व

लेखक : दिनेश सिंह तरकर (युवा पत्रकार), मथुरा

चलभाष : 09634522152

विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस प्रतिवर्ष 28 जुलाई को मनाया जाता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में विभिन्न प्रजाति के जीव-जंतु, प्राकृतिक स्रोत और वनस्पति विलुप्त हो रहे हैं। क्या आपने कभी सोचा कि इन सबके पीछे क्या वजहें हैं?

बढ़ती जनसंख्या, बढ़ता प्रदूषण, नष्ट होता पर्यावरण, प्रकृति और पर्यावरण का दोहन... ऐसे तमाम कारण हैं, जिनकी वजह से धरती पर जीवन का खतरा उत्पन्न हो रहा है, प्राकृतिक आपदाएं बढ़ रही हैं। प्रकृति के प्रति जिम्मेदारियों और जवाबदेहियों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से ही हर साल विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस मनाया जाता है। अब आप सोचेंगे कि प्रकृति संरक्षण की दिशा में आप क्या कर सकते हैं। आइए, चर्चा करते हैं कुछ प्रयासों पर, जिन्हें अपनी आदतों में ढ़ाल कर हम और आप प्रकृति संरक्षण की दिशा में काफी कुछ कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हिमांजलि फाउंडेशन के नेशनल वाइस प्रेसिडेंट मीडिया दिनेश सिंह तरकर ने अपने जीवन में प्रकृति, जल एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति कटिब) हैं। उन्होंने पिछले वर्ष अपने युवा साथियों के साथ प्रकृति संरक्षण की शपथ ग्रहण की। जिसकी वजह से युवाओं द्धारा प्रतिवर्ष ग्यारह सौ पौधे बंजर भूमि, नदी-तालाब, मंदिर-देवालय एवं ब्रज सौंदर्यीकरण के लिए प्रतिवर्ष पौधे रोपे जाते हैं। जिनको सींचने की जिम्मेदारी को संगठन के समस्त युवा बखूबी निभाते हैं।

ध्यान देने योग्य प्रमुख बातें :-

1. **जल संरक्षण :** पानी का दुरुपयोग करना बंद करें, जहां भी पानी बर्बाद हो रहा हो, उसे रोकें। नहाने के लिए, सफाई के लिए, गाड़ियां धोने के लिए बहुत ज्यादा पानी का इस्तेमाल न करें।

2. **ऊर्जा संरक्षण :** इसके लिए बिजली की बचत करें। काम होते ही बिजली के उपकरण बंद कर दें। गर्मी के दिनों में रात में कमरा ठंडा हो जाने पर एसी बंद भी कर सकते हैं। बिजली के साथ बिजली बिल भी बचेगा।

3. **पेड़-पौधे :** हमारे जीवन में कितने जरूरी हैं, यह तो आप जानते ही हैं। इसलिए घरों और सार्वजनिक जगहों पर पेड़ जरूर लगाएं। उपहार स्वरूप पौधा देने की परंपरा शुरू कर सकते हैं। लोग ऐसी शुरुआत कर भी चुके हैं, जिसे बड़े पैमाने पर अपनाए जाने की जरूरत है। हमें ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

4. **बागवानी करें :** खुद सब्जियां उगाएं। बाजार में मिल रही सब्जियां कीटनाशक और रसायनों का इस्तेमाल कर उगाई जाती हैं। ये रसायन पर्यावरण के लिए और ऐसी सब्जियां आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं।

5. **गंदगी न फैलाएं :** इधर-उधर कूड़ा फेंकने की बजाय कूड़ेदान में फेंकें। संभव हो तो खुद ही जैविक कचरों की कम्पोस्टिंग करे। गंदगी नहीं होने से बीमारियां नहीं फैलेगी और कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल खेतों में या बागवानी में किया जा सकेगा।

6. **धूम्रपान न करें :** यह आपके स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है और पर्यावरण के लिए भी। वायु प्रदूषण कम से कम हो, इसके लिए वाहनों का कम इस्तेमाल करें। कम दूरियों के लिए पैदल या साईकिल का प्रयोग करें। इसे अपनी आदत बना लें।

7. **सबसे जरूरी बात :** ये कि लोगों को प्रकृति, पर्यावरण और ऊर्जा संरक्षण के बारे में बताएं। इस आर्टिकल में बताए गए तमाम प्रयासों और आदतों के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरूक करें। तभी ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' का संदेश दुनियाभर में विश्व पटल पर एक नया आयाम स्थापित करेगा।

प्रेरक प्रसंग

" सुनी हुई बातों पर यकीन न करें "

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

एक शहर में एक बहुत ही कुशल व्यापारी रहता था। राजा को उसकी क्षमताओं के बारे में पता था, और इसलिए उसने उसे राज्य का प्रशासक बना दिया। अपने कुशल तरीकों से उसने आम आदमी को भी खुश रखा था, और साथ ही दूसरी तरफ राजा को भी बहुत प्रभावित किया था।

कुछ दिनों बाद व्यापारी ने अपनी लड़की का विवाह तय किया। इस उपलक्ष्य में उसने एक बहुत बड़े भोज का आयोजन किया। इस भोज में उसने राज परिवार से लेकर प्रजा, सभी को आमंत्रित किया। भोज के दौरान उसने सभी को बहुत सम्मान दिया और सभी मेहमानों को आभूषण और उपहार दिए। राजघराने का एक सेवक, जो महल में झाड़ू लगाता था, वह भी इस भोज में शामिल हुआ, मगर गलती से वह एक ऐसी कुर्सी पर बैठ गया जो राज परिवार के लिए नियत थी। यह देखकर व्यापारी आग-बबूला हो गया और उसने सेवक की गर्दन पकड़ कर उसे भोज से धक्के दे कर बाहर निकलवा दिया। सेवक को बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई और उसने व्यापारी को सबक सिखाने की सोची। कुछ दिनों बाद, एक बार सेवक राजा के कक्ष में झाड़ू लगा रहा था। उसने राजा को अर्धनिद्रा में देख कर बड़बड़ाना शुरू किया कि इस व्यापारी की यह मजाल की वह रानी के साथ दुर्व्यवहार करे। " यह सुन कर राजा अपने बिस्तर से कूद पड़ा और उसने सेवक से पूछा, क्या यह वाकई में सच है? क्या तुमने व्यापारी को दुर्व्यवहार करते देखा है? सेवक ने तुरंत राजा के चरण पकडे और बोला मुझे माफ कर दीजिये, मैं पूरी रात जुआ खेलता रहा और सो न सका। इसीलिए नींद में कुछ भी बड़बड़ा रहा हूं। राजा ने कुछ बोला तो नहीं, पर शक का बीज तो बोया जा चुका था। उसी दिन से राजा ने व्यापारी के महल में निरंकुश घूमने पर पाबंदी लगा दी और उसके अधिकार कम कर दिए। अगले दिन जब व्यापारी महल में आया तो उसे संतरियों ने रोक दिया। यह देख कर व्यापारी बहुत आश्चर्य -चकित हुआ। तभी वहीँ खड़े सेवक ने मजे लेते हुए कहा, ऐ संतरियों, जानते नहीं ये कौन हैं? ये बहुत प्रभावशाली व्यक्ति हैं और तुम्हें बाहर फिंकवा सकते हैं, जैसा इन्होंने मेरे साथ अपने भोज में किया था। तनिक सावधान रहना। यह सुनते ही व्यापारी को सारा माजरा समझ में आ गया। कुछ दिनों के बाद उसने उस सेवक को अपने घर बुलाया, उसकी खूब आव-भगत की और उपहार भी दिए। फिर उसने बड़ी विनम्रता से भोज वाले दिन के लिए क्षमा मांगते हुआ कहा की उसने जो भी किया गलत किया। सेवक खुश हो चुका था। उसने कहा न केवल आपने मुझसे माफी मांगी, पर मेरी इतनी आव-भगत भी की। आप चिंता न करें मैं राजा से आपका खोया हुआ सम्मान वापस दिलाउंगा। अगले दिन उसने राजा के कक्ष में झाड़ू लगाते हुआ जब राजा को अर्ध-निद्रा में देखा तो फिर बड़बड़ाने लगा कि हे भगवान, हमारा राजा तो ऐसा मूर्ख है की वह गुसलखाने में खीर खाता है। यह सुनकर राजा क्रोध से भर उठा और बोला मूर्ख सेवक, तुम्हारी ऐसी बोलने की हिम्मत कैसे हुई? तुम अगर मेरे कक्ष के सेवक न होते तो तुम्हें नौकरी से निकाल देता। सेवक ने दुबारा चरणों में गिर कर राजा से माफी मांगी और दुबारा कभी न बड़बड़ाने की कसम खाई। उधर राजा ने सोचा कि जब यह मेरे बारे में ऐसे गलत बोल सकता है तो अवश्य ही इसने व्यापारी के बारे में भी गलत बोला होगा, जिसकी वजह से मैंने उसे बेकार में दंड दिया। अगले दिन ही राजा ने व्यापारी को महल में उसकी खोयी प्रतिष्ठा वापस दिला दी।

हमें हर किसी के साथ सद्भाव और समान भाव से ही पेश आना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति बड़ा से बड़ा हो या छोटा से छोटा। हमेशा याद रखें जैसा व्यवहार आप खुद के साथ होना पसंद करेंगे वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ भी करें और दूसरी ये कि हमें सुनी सुनाई बातों पर यकीन नहीं करना चाहिए।

कवि की कलम से

सुखकारी शिक्षा

रचियता : महाकवि नाथूराम शर्मा 'शंकर', हरदुआगंज (अलीगढ़)

सांची बात सुनो सब भाई,
जो तुम चाहो मान-बड़ाई।
तो औंरों को बुरा न कहना,
सीखो सब से मिलकर रहना।।

करिये मात-पिता की पूजा,
याते उत्तम धर्म न दूजा।
गुरू लोगन की सेवा कीजे,
तिन को उपदेशामृत पीजे।।

हितवादिन सों ने बढ़ाओ,
खल, पापिन के पास न जाओ।
पारिजात पौरूष को मानो,
कामधेनु करनी को जानो।।

आलस, बैर, घमण्ड बिसारो,
छोड़ अनीति, नीति उरि धारो।
कर्म करो शुभ साहस राखो,
ठाली मन-मोदक मत चाखो।।

जागो भोर शौच कर न्हाओ,
कर भोजन पढ़ने को जाओ।
ऐसे श्रम सों विद्या सीखो,
सब साथिन से आगे दीखो।।

जब पूरी विद्या हो जावे,
उद्यम करना जो मन भावे।
फिर विधिवत विवाह कर लेना,
प्यारी बनिता को सुख देना।।

सुख में बीत जाये तरूणाई,
जब जानो अब देह बुढ़ाई।
तब सुत को प्रतिनिध कर अपना,
सब तज नाम ओउम् का तजना।।

कर सत्संग तीसरेपन में,
बाम सहित बसिये कानन में,
जो पै जीवित नारि रहेना,
तो सन्यास धर्म गह लेना।।

पूरण योग अखण्डित करना,
ब्रम्ह रन्ध्र खंडित कर मरना।
है यह राह मुक्ति मन्दिर की,
मानो सीख सुधी 'शंकर' की।।

महाकवि श्री नाथूराम शर्मा शंकर
की सत्यप्रकाशन से प्रकाशित
'शंकर - सर्वस्व' पुस्तक से

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

आपके विचार व सुझाव आमंत्रित हैं

प्रिय साथियों आप भी अपने सुझाव, विचार, लेख, कविता, स्वास्थ्य चर्चा आदि हमें भेज सकते हैं, जिन्हें हम अपने अगले अंक में प्रकाशित कर सकें।

E-Mail : sanskarjagratimission@gmail.com 09719910557

स्वास्थ्य चर्चा

'खुजली' का घरेलु उपचार

नीति प्रिय आर्य

मौसम के बदलने के कारण स्किन संबंधी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई बार शरीर में इंफेक्शन या फिर खुजली हो जाती है। इसका मुख्य कारण वातावरण मे ड्राईनेस के कारण होता है। खुजली की समस्या किसी को भी हो सकती है। जहां कई बार यह त्वचा में नमी की कमी के कारण होती है, तो वहीं दूसरी ओर इसके पीछे का कारण कीटाणु और संक्रमण भी हो सकते हैं। खुजली होने पर त्वचा को खुरचने से भले ही कुछ देर के लिए आराम मिल जाए, लेकिन इससे समस्या कम नहीं होती, बल्कि और भी बढ़ सकती है। कुछ मामलों में यह समस्या गंभीर हो जाती है और खुजली से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। अगर आपकी स्किन में ऐसा किसी तरह का इंफेक्शन या खुजली हो गई है, तो आप घरेलू उपाय द्वारा भी इस समस्या से निजात पा सकते है। आइये जानते हैं घरेलू नुस्खों से खुजली कैसे दूर करें:-

खुजली के छः घरेलु उपाय :-

1. खुजली की समस्या में तुलसी के फायदे बहुत अधिक है। खुजली होने पर तुलसी के पत्तों को अपने शरीर के उस जगह पर रगड़े जहा खुजली हो रही हो। तुलसी में थिमोल और कपूर की अच्छी मात्रा पाई जाती है। इससे आपकी त्वचा की जलन और खुजली पूरी तरह से दूर होती है।

2. शरीर की त्वचा की नमी कम हो जाती है तो ऐसे में त्वचा पर खुजली चलने लगती है। ऐसे में एलोवेरा आपकी खुजली की समस्या को तेजी से ठीक कर सकता है। एलोवेरा में मॉइस्चराइजिंग के गुण पाए जाते है। इसके लगाने से आपकी त्वचा की जलन और खुजली तेजी से दूर होती है। इसके लिए आप एलोवेरा की पट्टी को काटकर उसमे से जैल को निकाल लें और इसे अपने खुजली वाली जगह पर लगाए।

3. खुजली को दूर करने के लिए बेकिंग सोडा के फायदे बहुत अधिक है। इसमें कई ऐसी इंफ्लेमेंटरी प्रॉपर्टीज पायी जाती है जो आपकी त्वचा पर से प्राकृतिक एसिड न्यूट्रलाइजर का काम करती है। इससे आपकी खुजली में आराम मिलता है और यह तेजी से ठीक होती है। इसके उपयोग के लिए आप बेकिंग सोडा में थोड़ा पानी मिलकर एक पेस्ट तैयार कर लें और इसे अपनी त्वचा के उस स्थान पर लगाए जहां खुजली हो रही हो।

4. चन्दन त्वचा को ठंडक प्रदान करता है और इसके साथ काली मिर्च को मिलाकर लगाने से आपकी खुजली में तेजी से आराम मिलता है। ये दोनों ही चीजे आसानी से घर में उपलब्ध होती है। इसके इस्तेमाल के लिए चन्दन और काली मिर्च को मिलाकर इनका महीन चूर्ण बनाकर इनका एक पेस्ट तैयार कर लें। अब इस पेस्ट को स्थान पर लगाए जहां की त्वचा पर खुजली हो रही हो। इससे आपकी खुजली की समस्या पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

5. खुजली दूर करने के लिए पुदीने का उपयोग पुराने जमाने से किया जाता आ रहा है। पुदीना में शीतलता प्रदान करने का अद्भुत गुण होता है। खुजली होने पर आप पुदीने की पत्तियों को मसल कर अपनी त्वचा के उस स्थान पर लगाए जहां खुजली हो रही हो। इसके लगाने से ही खुजली दूर होगी।

6. लहसुन के फायदे भी खुजली दूर करने में बहुत ही असरदार होते है। इसमें मौजूद रस में कई एंटी बैक्टीरियल तत्व पाए जाते है जो कि आपकी त्वचा पर खुजली के प्रभाव को कम करते है। इसके उपयोग के लिए आप लहसुन की कुछ कलियों को छीलकर उसे सरसों के तेल में डालकर उसे अच्छे से गर्म कर लें। 5 से 10 मिनिट अच्छे से गर्म कर लेने के बाद इस तेल को छानकर इससे अच्छे से मालिश करें।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

अखिल भारतीय राज्यार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चन्द्रदेव जी को स्मृति चिन्ह भेंट करते संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व अन्य।

मिशन के संरक्षक डा.अशोक कुंतल जी की वैवाहिक वर्षगांठ के अवसर पर यज्ञ सम्पन्न करातीं उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी।

वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रदेव जी के संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय आगमन पर वार्ता करतीं मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य जी, संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व सचिव विवेक प्रिय आर्य जी। अंतिम चित्र में विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण करते सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

कृष्णा बिहार कॉलोनी (मथुरा) मथुरा निवासी चौ.बहादुर सिंह जी (पू.ब्लॉक प्रमुख) व श्री रौदास सिंह जी के यहां यज्ञ सम्पन्न करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

डा.कपिल प्रताप सिंह जी के पुत्र उत्कर्ष प्रताप सिंह के जन्मदिवस पर यज्ञ सम्पन्न कराते मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी। दूसरे चित्र में बेटी जागृति प्रिय आर्य के अन्नप्राशन संस्कार के अवसर पर खीर खिलाते सचिव विवेक प्रिय आर्य जी व नीति प्रिय आर्य जी।

जागृति प्रिय के अन्नप्राशन संस्कार पर यज्ञ करते परिवारीजन। दूसरे चित्र में डा.कपिल प्रताप सिंह जी की माताजी स्व.राजबाला देवी की पुण्यतिथि पर यज्ञ सम्पन्न करते पदाधिकारी। दूसरे चित्र में ऊंचागांव निवासी प्रमोदी चौधरी के जन्मदिन पर यज्ञ सम्पन्न कराते संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' की समाप्ति के लिए भारत सेवा न्यास द्वारा आयोजित महायज्ञ को सम्पन्न करातीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी। यज्ञ में यजमान भारत सेवा न्यास के राष्ट्रीय अध्यक्ष मानवेन्द्र सिंह पाण्डव जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

08 जून 2020 राजपथ मथुरा

संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता

डॉ. अर्चना प्रिय ने सम्पन्न कराया अन्नप्राशन संस्कार

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा सोमवार को ऊंचागांव में अन्नप्राशन संस्कार कराया गया। इस अवसर पर वैदिक विधि विधान से यज्ञ व मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य की बेटी जागृति प्रिय आर्य को खीर खिलाकर अन्नप्राशन पूर्ण कराया। डॉ. आर्य ने कहा कि हमारे ऋषियों द्वारा सोलह संस्कारों की श्रृंखला मानव जीवन के लिए बनाई है। प्राचीनकाल में बच्चों को सभी संस्कारों से परिपूर्ण किया जाता था। आज की पीढ़ी दिशाहीन होती जा रही है उसका प्रमुख कारण संस्कार न होना है। अन्नप्राशन सातवां संस्कार है जो आज वैदिक विधि विधान से सम्पन्न कराया गया है। मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने कहा कि संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज बनता है। आज फिर संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। इस दौरान भजनों की प्रस्तुति भी दी गयी। सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, लखन सिंह आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, सत्यवती देवी आर्य, सरोज रानी आर्य, नीति प्रिय आर्य, उत्कर्ष प्रताप सिंह, आराध्या कुंतल, संस्कार कुंतल, सुषमा सिंह, विकास ओम, देवांग आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला आगरा | शनिवार, 16 मई 2020

यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म : डॉ. आर्य

टाउशिप क्षेत्र में यज्ञ कराती संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य।

टाउनशिप। कृष्णा विहार कॉलोनी में सादाबाद के पूर्व ब्लाक प्रमुख बहादुर सिंह चौधरी के निवास पर संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने यज्ञ कराया। इस दौरान डॉ. आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, इसे प्रतिदिन घरों में करना चाहिए। बच्चों के जन्मदिन केक काट कर नहीं, बल्कि यज्ञ अनुष्ठान कर मनाने चाहिए। पश्चात संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण लोग बच्चों के जन्मदिन को मोमबत्ती बुझा कर मनाते हैं, जो कि गलत है। हमारे देश की परंपरा तो तमसो मां ज्योतिर्गमय अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की है न कि प्रकाश से अंधकार की ओर आने की। यज्ञमान मधु सिंह व बहादुर सिंह रहे। संवाद

06 जून 2020 राजपथ मथुरा

राजनीति में न आना आर्यसमाज की बड़ी भूलः चंद्रदेव

संस्कार जागृति मिशन के कार्यालय पर हुआ आर्य विद्वान का स्वागत

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान व अखिल भारतीय राज्यार्य सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य चंद्रदेव शास्त्री शुक्रवार को संस्कार जागृति मिशन के ऊंचागांव स्थित कार्यालय पर पहुंचे जहां मिशन के पदाधिकारियों द्वारा उनको स्मृति चिन्ह व पटुका ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आचार्य ने कहा कि राज्यार्य सभा का उद्देश्य आर्य राजा का निर्माण करना है। आगामी चुनावों में सभा अपने प्रत्याशी उतार अच्छे जनप्रतिनिधि चुने जाएंगे। उन्होंने कहा कि देश को आजाद कराने के बाद राजनीति से दूर रहना आर्य समाज की बड़ी भूल रही है। आचार्य श्री ने मिशन द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने आभार जताते हुए कहा कि आर्यजनों को एकजुट होकर राजनीति में भाग लेना चाहिए, जिससे श्रेष्ठ जनप्रतिनिधि हमें मिल सकें। इस अवसर पर मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, विवेक प्रिय आर्य, डॉ. साहब, बलवीर सिंह, देवेंद्र सिंह तूफान, लखन सिंह आर्य आदि मौजूद रहे।

05 जून 2020 राजपथ मथुरा

विश्व पर्यावरण दिवस पर किया वृक्षारोपण

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर संस्कार जागृति मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी है, हवा को शुद्ध रखते है और विषैली गैसों को समाप्त करते हैं। वृक्ष हमें कई प्रकार के लाभ पहुंचाते हैं। हवा, पानी और मिट्टी का प्रदूषण वृक्षों की बदौलत से ही सम्भव है। श्री आर्य ने कहा कि यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा करना चाहते है तो हमें न केवल अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए बल्कि उनका पालन, पोषण और संरक्षण भी करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 'वृक्ष कबहु न फल चखे, नदी न सचै नीर' वृक्ष अपने फल को खुद कभी नहीं चखते हैं और न ही नदी अपने जल को खुद पीती है बल्कि परमार्थ के लिए ही अपने फल और नीर को समर्पित करते हैं। इस अवसर पर मिशन के

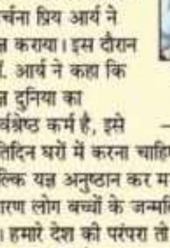

कार्यकर्ताओं द्वारा जगह जगह वृक्षारोपण कर उनके संरक्षण का संकल्प लिया गया।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 26 मई 2020

जरूरतमंदों की सेवा पर मिला सम्मान

संस, मथुरा : लॉकडाउन में जरूरतमंदों की सेवा करने पर एक दर्जन से ज्यादा संस्थाओं ने संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य को कोराना वॉरियर्स के सम्मान से नवाजा।

मिशन द्वारा लॉकडाउन में आटा, चावल, नमक, तेल, पूड़ी, सब्जी ...

छोटी सी बात 2 जून 2020

कोराना महामारी की शांति हेतु हवन कराया

मथुरा (छोटी सी बात)। भारत सेवा न्यास द्वारा हवन कर कोरोना महामारी की शांति के लिये प्रार्थना की गयी। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष अर्चना प्रिय आर्य द्वारा वैदिक रीति रिवाज से हवन ...

इस समय पूरा विश्व वैश्विक महामारी कोरोना से जूझ रहा है। सरकार अपना कार्य कर रही है और हमें सरकार का दिशानिर्देश मानते हुए अपने आपको अपने जीवन को आगे बढ़ाना है। इस हवन के माध्यम से ईश्वर से यह प्रार्थना की कि कोरोना महामारी हमारे देश पर असर ज्यादा न दिखाएं और हमारे देश को कोरोना मुक्त करें। लोगों को अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ानी चाहिए योग और व्यायाम के माध्यम से, साफ-सफाई और खानपान का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अर्चना प्रिय आर्य ने बोलते हुए कहा कि हमें अपने बच्चों और अपने परिवारीजनों को वैदिक संस्कृति के हिसाब से हवन कराना चाहिए इससे लोगों में संस्कार जागृत होते हैं।

इस अवसर पर संगीता, खुशी सिवाच, रुस्तम सिंह लोधी, अनिता चौधरी, कांति लोधी, पप्पू पहलवान, राकेश सारस्वत, पंकज अग्रवाल, दीपक अवस्थी, सिद्धार्थ बंसल, अनुपम सिंह, अनुराग पाण्डेय, संजीव चौधरी, प्रियांकर शर्मा आदि मौजूद थे।

आज आगरा, 07 जून 2020

राजनीति में न आना आर्यसमाज की बड़ी भूल : आचार्य चंद्रदेव

[illegible]

15 मई 2020 राजपथ मथुरा

जन्मदिन पर दीप बुझाएं नहीं बल्कि जलाएंः अर्चना

टाउनशिप क्षेत्र में वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। रिफाइनरी नगर क्षेत्र की कृष्णा विहार कॉलोनी निवासी सादाबाद के पूर्व ब्लॉक प्रमुख बहादुर सिंह चौधरी के यहां संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि विधान से यज्ञ सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर डा. आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, इसे प्रतिदिन घरों में करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चों के जन्मदिन केक काटकर नहीं, बल्कि यज्ञ अनुष्ठान कर ही ... से प्रकाश की ओर जाने की है न कि प्रकाश से अंधकार की ओर ... शुद्ध होता है जिससे हमें श्वसन क्रिया शुद्ध मिलेगी। यज्ञ हमारे ...

अमर उजाला आगरा | बुधवार, 3 जून 2020

कोरोना से मुक्ति के लिए हवन किया

मथुरा। गंगा दशहरा पर्व पर भारत सेवा न्यास कार्यालय पर योग शिविर आयोजित किया गया। कोरोना महामारी से ...

25 मई 2020 ब्रज गरिमा

डा. अर्चना प्रिय सम्मानित

मथुरा, कोरोना संक्रमण (कोविड-19) ... के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन ... प्रभावित जरूरतमंदों के लिए निरन्तर ... कार्य करने पर एक दर्जन से ज्यादा ... संस्थाओं द्वारा संस्कार जागृति मिशन की ... अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य को कोराना ... वॉरियर्स सम्मान से नवाजा है।

मिशन द्वारा लॉकडाउन प्रभावितों के ... निःशुल्क आटा, चावल, नमक, तेल ...

... सैनेटाइजर व साबुन भी दिये ... और लोगों को सामाजिक दूरी व घरों पर रहने के लिए जागरूक भी किया गया ... प्रधानमंत्री जन कल्याणकारी योजना ... प्रसार अभियान ...

हिन्दुस्तान

संस्थाओं ने किया कोरोना योद्धाओं का सम्मान

[illegible]

हिन्दुस्तान आगरा • रविवार • 07 जून 2020

राजनीति में न आना आर्यसमाज की बड़ी भूल : चंद्रदेव

मथुरा। देश की आजादी के बाद राजनीति से दूर रहना आर्य समाज की बड़ी भूल रही है। जब तक देश का आर्य राजा नहीं होगा तब तक अंधविश्वास व पाखण्ड को हटाया नहीं जा सकेगा। तभी देश का कल्याण होगा।

यह विचार शुक्रवार को अखिल भारतीय राज्य आर्य सभा के अध्यक्ष ...

छोटी सी बात 15 मई 2020

दीप बुझाएं नहीं बल्कि जलाएं

[illegible]

हिन्दुस्तान • रविवार • 16 मई 2020 •

वैदिक विधि विधान से आयोजित यज्ञ संपन्न

मथुरा। रिफाइनरी नगर क्षेत्र की कृष्णा विहार कॉलोनी में सादाबाद के पूर्व ब्लॉक प्रमुख बहादुर सिंह चौधरी के घर संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के ब्रह्मत्व में विधि विधान से वैदिक यज्ञ सम्पन्न किया गया। इस दौरान डा.आर्य ने कहा कि यज्ञ दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म है, इसे घर में प्रतिदिन करना चाहिए। बच्चों के जन्मदिन केक काटकर नहीं, बल्कि यज्ञ अनुष्ठान करके ही मनाने चाहिए। जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाना गलत है। हमारे देश की परंपरा तो अंधकार से प्रकाश की ओर आने की है।

छोटी सी बात 08 जून 2020

संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने आवश्यकता

[illegible]

आज आगरा, 09 जून 2020

संस्कारों को घरों में पुनः स्थापित करने की आवश्यकता

डॉ. अर्चना प्रिय ने सम्पन्न कराया अन्नप्राशन संस्कार

[illegible]

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्काइब करें।